# हिंदी (लोकवाणी)

## अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 1 के उत्तर

**प्र. 1. (अ)**

**(1)**

**(2)** (i) (1) तूफान
(2) आगाह।

(ii) (1) सूखी-प्यासी
(2) बच्चे-बड़े।

**(3)** वाणी मनुष्य को ईश्वर की एक अनमोल देन है। इसलिए मनुष्य को इस ईश्वरीय देन का सदुपयोग करना चाहिए। हमारे व्यवहार में मधुर वाणी का विशेष महत्त्व है। अपने मधुर वचनों से हम किसी के निराश हृदय में आशा का संचार कर सकते हैं। मनुष्य के मीठे बोल किसी के गम को खुशी में बदल सकते हैं। मधुर वाणी दुश्मन को भी दोस्त बना लेती है। मधुर वाणी व्यक्ति का विशेष गुण है। मधुर भाषी व्यक्ति को आदर मिलता है। मधुर वाणी से बिगड़े काम भी बन जाते हैं। मधुर वाणी व्यवसायी को व्यापार-धंधे में लाभ पहुँचाती है, तो नौकरी-पेशा व्यक्ति को अपने कार्य-क्षेत्र में सम्मान दिलाती है। वाणी की मधुरता से परिवार में मेलजोल का माहौल बना रहता है। वाणी की मधुरता से आपसी लड़ाई-झगड़े भी मिट जाते हैं। लेकिन मधुर भाषी व्यक्ति को अपनी भाषा का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। उसे मधुर वचन बोलकर किसी को ठगने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

**प्र. 1. (आ)**

**(1)**

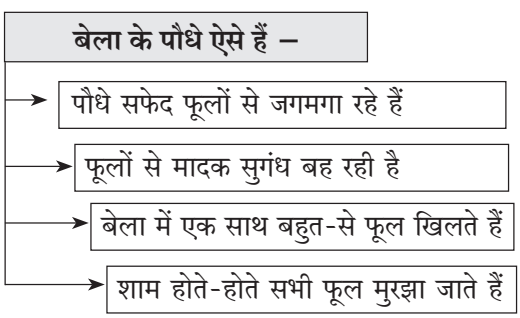


**(2)** (i) आतुर + ता = आतुरता (ii) प्यार + आ = प्यारा
(iii) सुगंध + इत = सुगंधित (iv) अनुभव + ई = अनुभवी।

**(3)** संतोष और असंतोष का भाव मानव-जीवन में बहुत महत्त्व रखता है। ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है और उसी ने संसार की समस्त वस्तुओं को भी बनाया है। प्रकृति का प्रत्येक जीव इन वस्तुओं का उपयोग करता है और संतुष्ट रहता है। केवल मनुष्य ही है, जो कभी संतुष्ट नहीं होता। इसका कारण एक ही है कि पशु-पक्षियों को संग्रह की चिंता नहीं होती। वे कल की चिंता न करके केवल वर्तमान में जीते हैं। भविष्य के लिए संग्रह ही दुख का कारण है। वही दुख मन में असंतोष पैदा करता है। खग अपने जीवन के एक-एक क्षण को भोग लेता है परंतु मनुष्य इस सौभाग्य से वंचित ही रह जाता है। उसे जो भी प्राप्त हो जाता है, उससे अधिक पाने के लिए वह और व्यग्र हो जाता है। और यह चक्र अनवरत रूप से चलता रहता है। ऐसे व्यक्ति विरले होते हैं, जो अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट होना सीख लेते हैं। यही दुनिया के सबसे सुखी लोग हैं। कहा गया है –

गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

**प्र. 2. (अ)**

**(1)** (i)

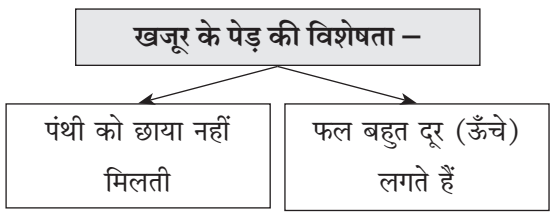


(ii)

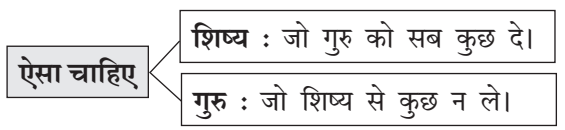


**(2)** संत कबीर कहते हैं कि कमजोर व्यक्तियों को कभी सताना नहीं चाहिए। कमजोर व्यक्तियों की आह में बहुत शक्ति होती है। ऐसे व्यक्तियों को सताने पर उनकी आह लगती है, जो बहुत खतरनाक होती है। इसका उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि लुहार की धौंकनी मरे हुए जानवर की खाल से बनी हुई निर्जीव होती है, पर उसकी साँस (आह) से प्रज्ज्वलित अग्नि लोहे को भी भस्म कर देती है।

**प्र. 2. (आ)**

**(1)**

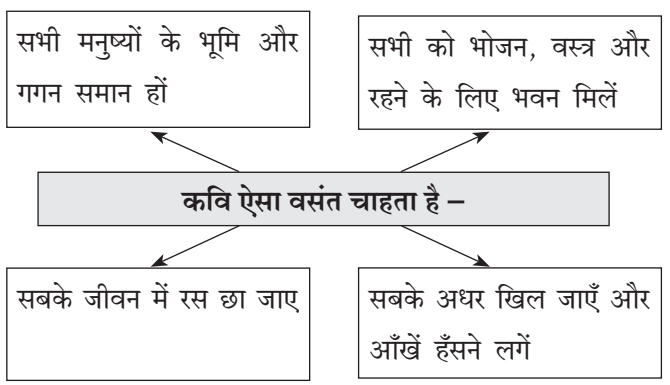


**(2)** कवि कामना करते हैं कि समस्त संसार में ऐसा वसंत आए, जो भू मंडल के प्रत्येक मानव को भोजन, वस्त्र और घर प्रदान करे। सभी के जीवन में खुशियाँ छा जाएँ। प्रत्येक मनुष्य के अधरों पर हँसी और नेत्रों में संतोष की चमक हो। यदि ऐसा वसंत इस धरती पर आ जाए तो ग्रीष्म और शिशिर की असहनीय गरमी और सरदी भी लोगों को कष्ट नहीं देगी। ऐसा वसंत कब आएगा?

**प्र. 3. (1)** (i) हथेलियाँ।

(ii) चहचहाती।

**(2)** (i) **के बिना:** गाँव के लोग खोए हुए आदमी के बिना बेचैन रहने लगे। ***अथवा***

(ii) **लेकिन** : एक दिन रास्ता पूछ पूछते-पूछते यहाँ आया था लेकिन अब लोगों को रास्ता बता रहा हूँ।

**(3)**

| संधि शब्द | संधि-विच्छेद | संधि भेद |
|---|---|---|
| **सर्वोत्तम** | सर्व + उत्तम | **स्वर संधि** |

***अथवा***

| | | |
|---|---|---|
| सन्मार्ग | **सत् + मार्ग** | **व्यंजन संधि** |

**(4)** (i) तिल का ताड़ बनाना।

**वाक्य :** नकुल की बात का विश्वास मत करना, उसकी तो तिल का ताड़ बनाने की आदत है।

***अथवा***

(ii) (1) खाली हाथ लौटना।

**अर्थ :** कुछ भी न पाना।

**वाक्य :** सबसे अधिक सीटों पर विजयी होने पर उस दल को सरकार बनाने का अवसर तो मिला, पर बहुमत सिद्ध न कर पाने के कारण उसे खाली हाथ लौटना पड़ा।

(2) चौपट हो जाना।

**अर्थ :** बरबाद हो जाना।

**वाक्य :** ओला वृष्टि से खेत में गेहूँ की खड़ी फसल चौपट हो गई।

**(5)** (i) अपूर्ण वर्तमानकाल।

(ii) (1) राजेंद्र बाबू को पहली बार पटना स्टेशन पर देखा।

(2) आजकल मेल को रोककर माल को पास करना होगा।

**(6)** (i) मिश्र वाक्य।

(ii) क्या उन्होंने पाँच कमरों के फ्लैट खरीदा है?

**प्र. 4. (अ)** तथा **(आ)**

**उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी**

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।